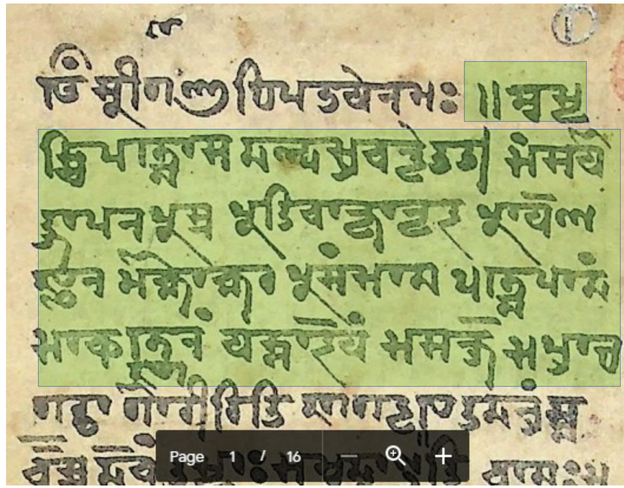
Dina Nath Raina Sharada Manuscript June-3.pdf

Title : Asya Vamasya Suktam (Rigveda) – Durga Suktam



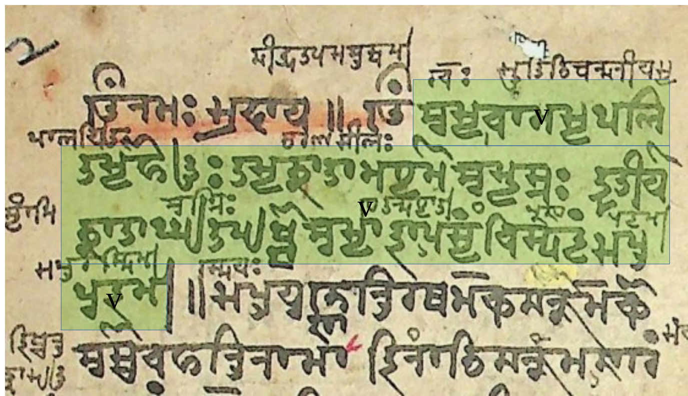
अस्य वामस्य सूक्तम्

(ऋग्वेदः मण्डलम् १. सूक्तम् १६४)

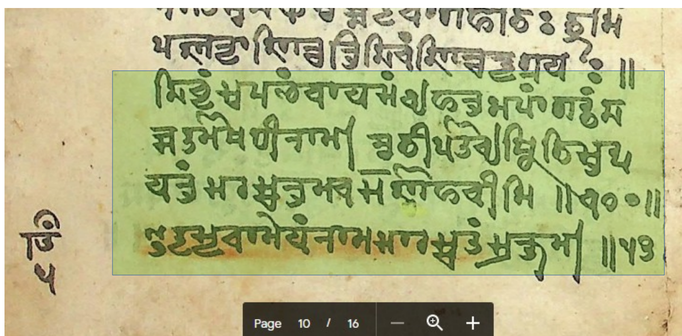
सायणभाष्येण आत्मानन्दभाष्येण चोपेतम्

सायणभाष्यम्

अस्य वामस्येति द्विपञ्चाशदृचमष्टमं सूक्तं दैर्घतमसम्। अत्रेयमनुक्रमणिका—
अस्य द्विपञ्चाशदल्पस्तवं त्वेतत् संशयोत्थापनप्रश्नप्रतिवाक्यान्यत्र प्रायेण ज्ञानमोक्षा-
क्षरप्रशंसा च। पञ्चपादम्—साकंजानाम्—यद्गायत्रे—अयं स शिङ्क्ते—सप्तार्ध-
गर्भाः—गौरीः—इति जगत्यः। एतदन्तं तु वैश्वदेवम्। तस्याः समुद्राः—इति



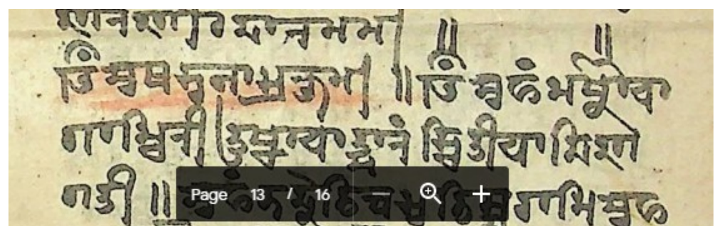
अस्य वामस्य पलितस्य होतुस्तस्य भ्राता मध्यमो अस्त्यश्नः।
तृतीयो भ्राता घृतपृष्ठो अस्यात्रापश्यं विश्पतिं सप्तपुत्रम् ॥ १ ॥



दिव्यं सुपर्णं वायसं बृहन्तमपां गर्भं दर्शतमोषधीनाम्।
अभीपतो वृष्टिभिस्तर्पयन्तं सरस्वन्तमवसे जोहवीमि ॥ ५२ ॥

Ref:https://archive.org/details/in.ernet.dli.2015.226346/page/n33/mode/2up

Shri Durga Suktam



[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible] ॥२५॥

[illegible] ३०

[illegible] ३१ ॥ [illegible]

प्रति ३

[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]

॥१०॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

3

[illegible]